राक्षस और दर्जी

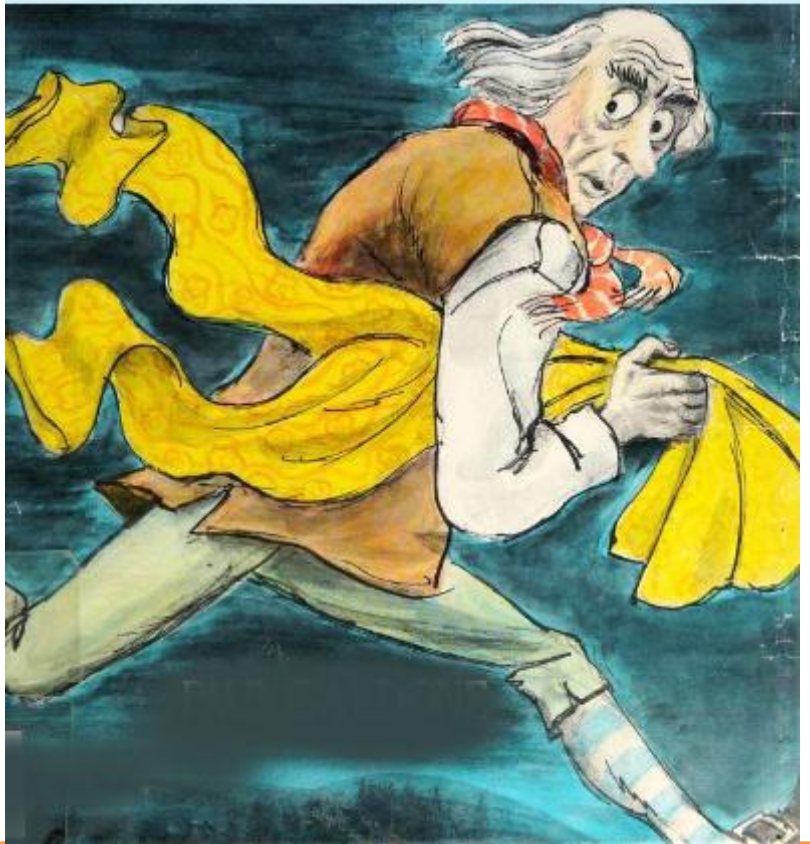

राक्षस और दर्जी

दर्ज़ी जब तक पुराने और डरावने कब्रिस्तान में पहुंचा तब तक आकाश में अंधेरा छा गया था. अगर दर्जी रात को कब्रिस्तान में ग्रैंड ड्यूक के लिए नई पतलून सिलेगा तो ड्यूक उसे इनाम में एक सोने से भरा पर्स देगा.

"क्यों, यहाँ तो कोई भूत-प्रेत नहीं है," दर्जी ने खुद को आश्वस्त करने के लिए कहा और फिर अपने काम में लग गया. वह मुश्किल से यह शब्द कह पाया जब पृथ्वी कांपने लगी. अचानक एक विशाल सिर उसके पीछे जमीन में से ऊपर उठा.

"तुमने क्या मेरे इस बड़े सिर को देखा?" राक्षस ने पूछा.

"हाँ, मैं उसे देखा है, लेकिन मुझे अभी यह काम पूरा करना है," दर्जी ने कांपते हुए जवाब दिया.

पाठक उस गरीब दर्जी की ज़रूर जय-जयकार करेंगे, जो काम पूरा करने की लगन में, भूत-प्रेत तक से नहीं डरा. और वे पॉल के शानदार राक्षस के चित्रों से भी खुश होंगे, जो बेहद डरावने हैं.

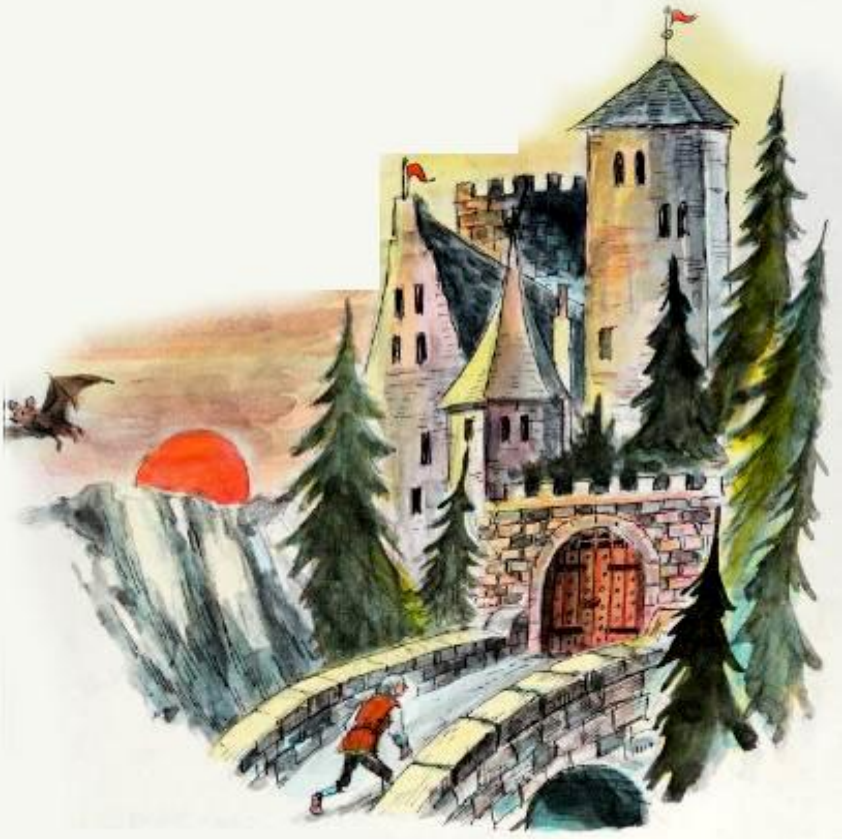

एक दिन पहले ही गरीब दर्जी को ग्रैंड ड्यूक के महल में बुलाया गया था.

"महामहिम, रात होने से पहले तुमसे बोलना चाहते हैं," दूत ने कहा.

इसलिए दिन ढलने से पहले ही दर्जी महल में हाज़िर हुआ.

ग्रैंड ड्यूक ने कहा, "मुझे एक नई पतलून की जरूरत है. उसे इस कपड़े से काटना, पर यह सुनिश्चित करना कि पतलून सुंदर और आरामदेय हो."

"आपकी इच्छा मेरी आज्ञा है, महाराज," दर्जी ने जवाब दिया.

ग्रैंड ड्यूक ने सिर हिलाया. "अब ध्यान से मेरी बात सुनो," उन्होंने कहा. "पर तुम्हें पतलून की सिलाई का काम रात में, पुराने कब्रिस्तान में करना होगा. फिर, जब मैं वो पतलून पहनूंगा तब मेरी किस्मत चमकेगी - यह बात मेरे ज्योतिषी ने मुझे बताई है."

अब हर कोई जानता था कि पुराना कब्रिस्तान भूत-प्रेतों का अड्डा था और अंधेरा होने के बाद वहां अजीबो-गरीब चीजें होती थीं. लेकिन ग्रैंड ड्यूक के आदेश को कोई भी मना नहीं कर सकता था.

"मैं कब्रिस्तान में पतलून की सिलाई करने से नहीं डरूंगा," दर्जी ने साहसपूर्वक कहा. "ठीक है," ग्रैंड ड्यूक ने कहा. "और जब तुम लौटोगे तो सोने से भरा यह पर्स तुम्हारा होगा!"

फिर सिलाई की चीज़ें और एक मोमबत्ती लेने के लिए दर्जी अपनी दुकान में वापस गया. वो डरा हुआ था, लेकिन फिर भी वो रात के अँधेरे में आगे बढ़ा.

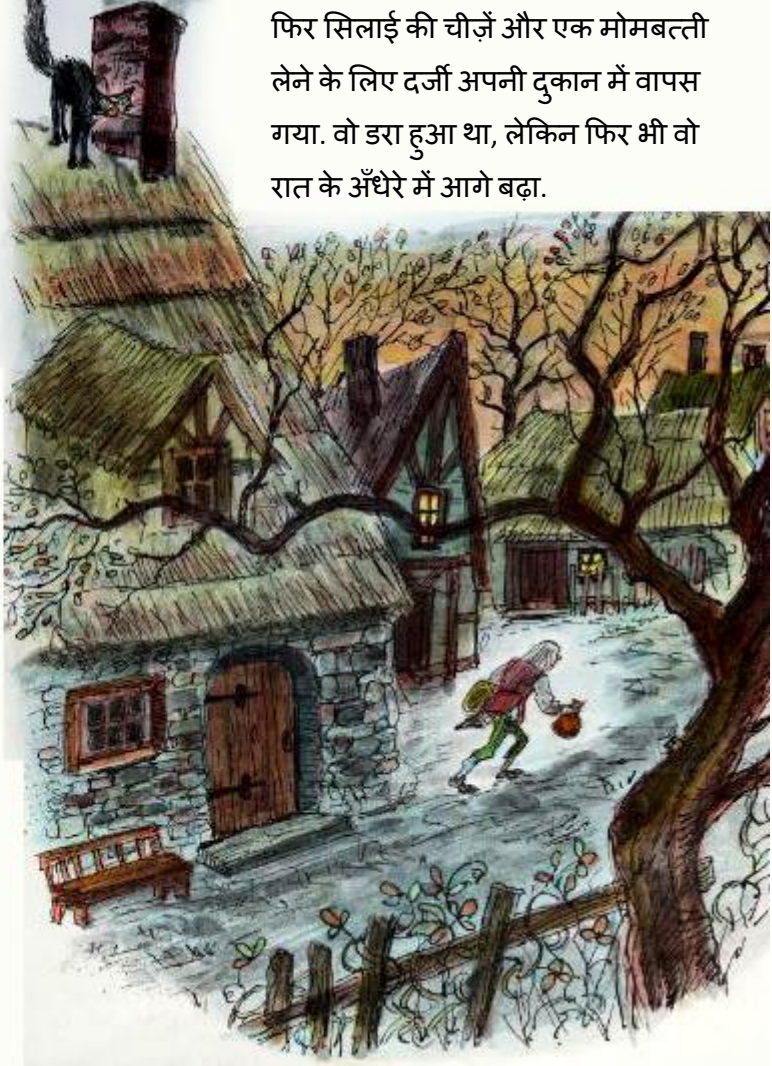

जैसे-जैसे वो घाटी में आगे बढ़ा, रात और गहरी होती गई. अंत में वो उस भयानक, भुतहे पुराने कब्रिस्तान में पहुंचा.

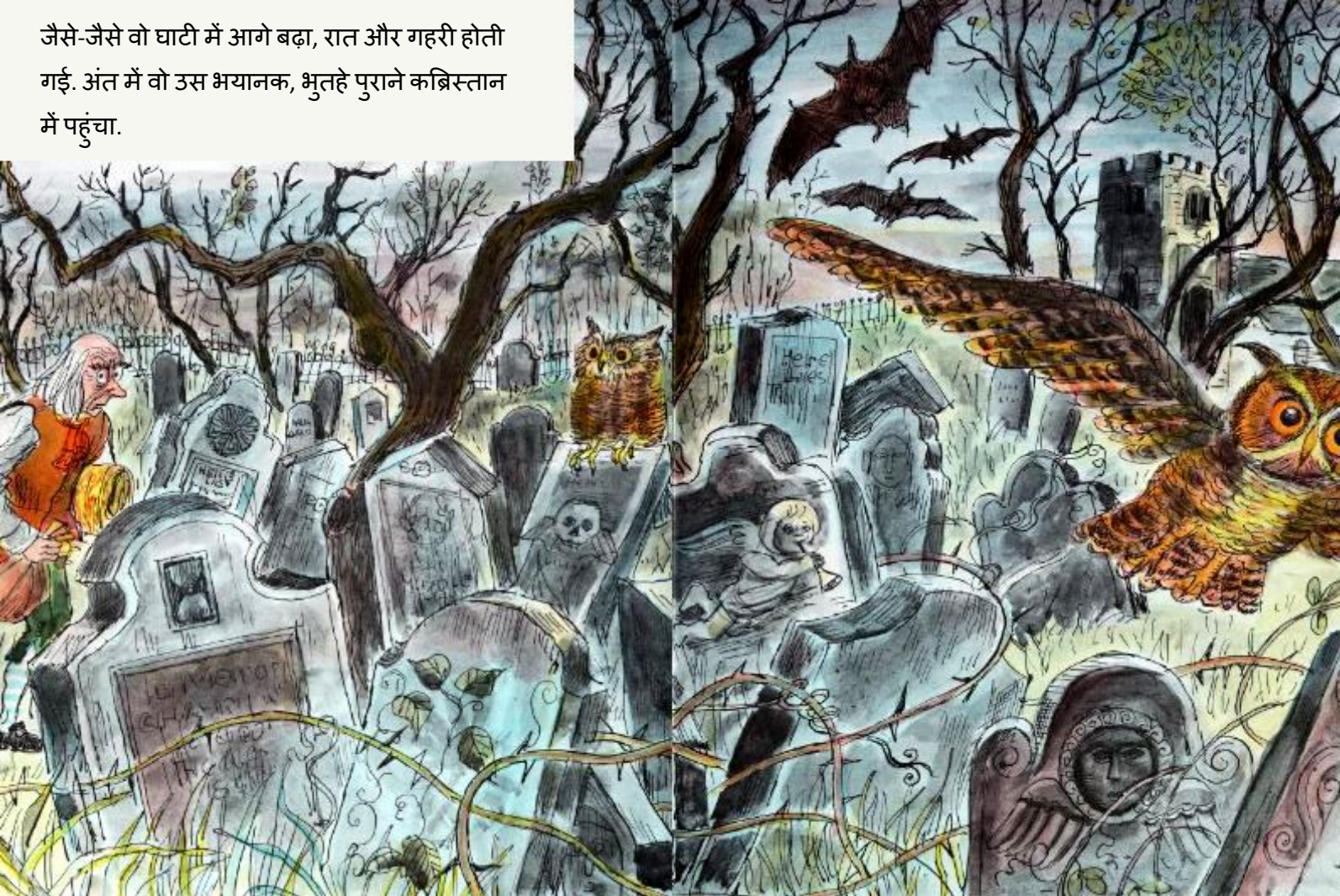

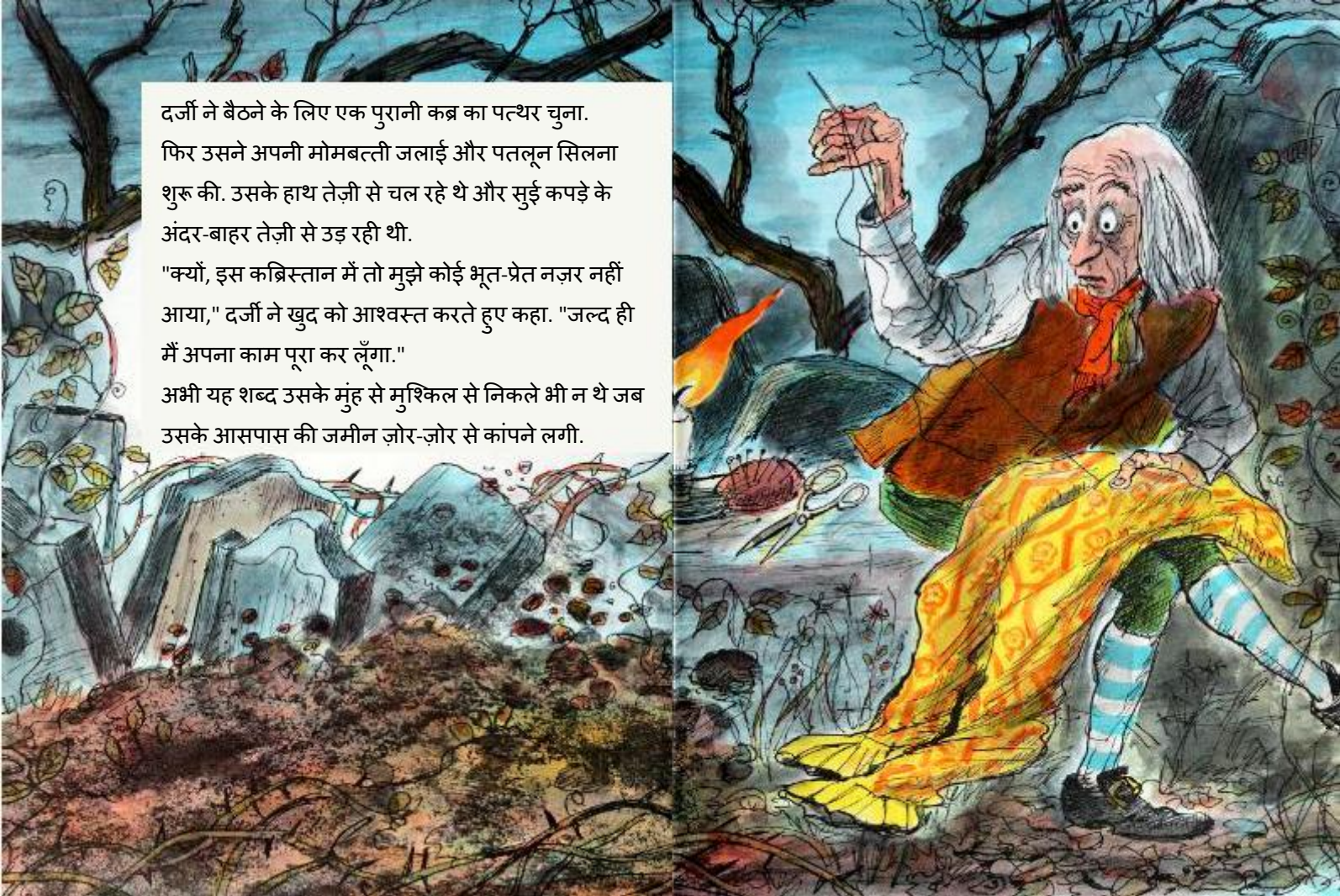

दर्जी ने बैठने के लिए एक पुरानी कब्र का पत्थर चुना. फिर उसने अपनी मोमबत्ती जलाई और पतलून सिलना शुरू की. उसके हाथ तेज़ी से चल रहे थे और सुई कपड़े के अंदर-बाहर तेज़ी से उड़ रही थी.

"क्यों, इस कब्रिस्तान में तो मुझे कोई भूत-प्रेत नज़र नहीं आया," दर्जी ने खुद को आश्वस्त करते हुए कहा. "जल्द ही मैं अपना काम पूरा कर लूँगा."

अभी यह शब्द उसके मुंह से मुश्किल से निकले भी न थे जब उसके आसपास की जमीन ज़ोर-ज़ोर से कांपने लगी.

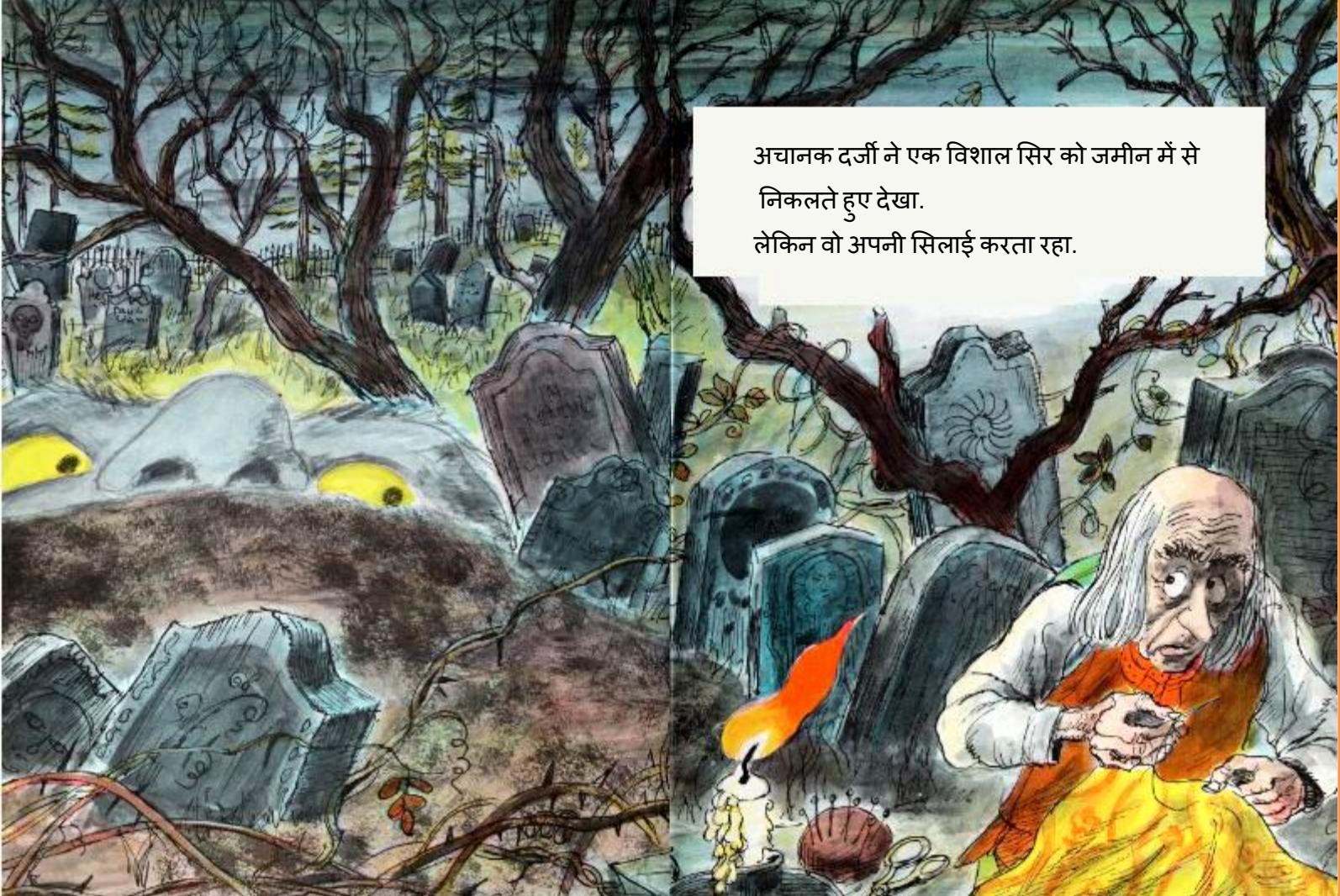
अचानक दर्जी ने एक विशाल सिर को जमीन में से
निकलते हुए देखा.
लेकिन वो अपनी सिलाई करता रहा.

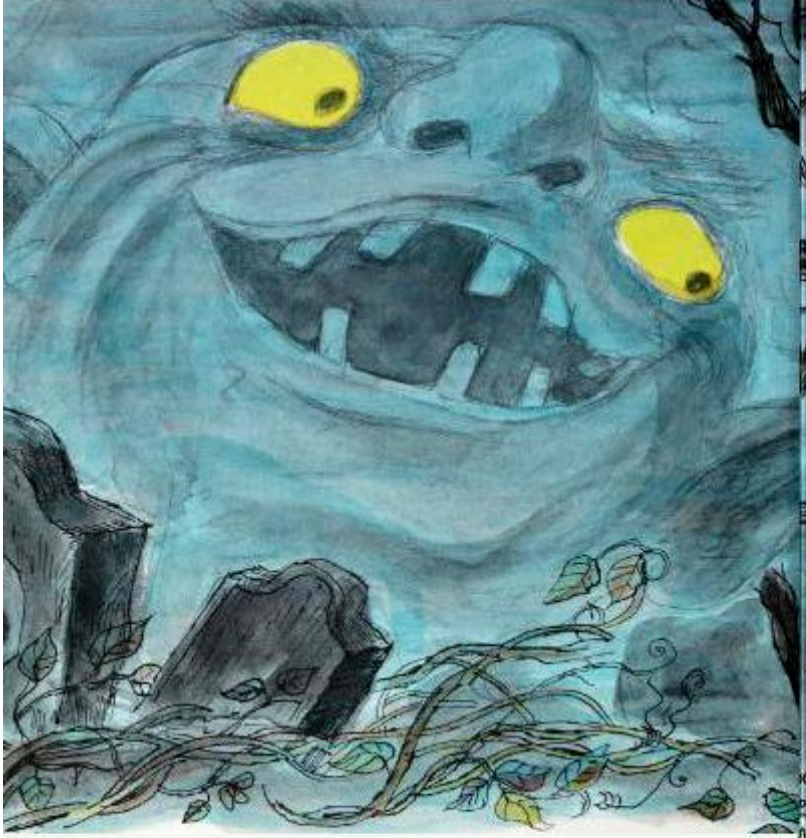

जब राक्षस का विशाल सिर ज़मीन के ऊपर आ गया तो राक्षस एक भयानक आवाज़ में चिल्लाया.
"क्या तुम मेरे इस विशाल सिर को देख रहे हो?"

दर्जी पूरी तरह से हिल गया था. "हुज़ूर, मैंने सिर को देखा है, लेकिन मुझे अभी यह काम पूरा करना है," उसने जवाब दिया. और फिर से दर्ज़ी पतलून सिलने में लग गया.

धीरे-धीरे राक्षस की गर्दन ज़मीन के ऊपर आई. राक्षस ने पुकारा, "क्या अब तुम्हें मेरी महान गर्दन दिखाई दे रही है?“ दर्जी ने अपने दिल की धड़कन महसूस की.

"हाँ, मैं गर्दन देख रहा हूँ, लेकिन मुझे इस पतलून को सीना ज़रूरी है," उसने जवाब दिया.
और वो फिर से पतलून की सिलाई में लग गया.

राक्षस का सिर और गर्दन लगातार ऊपर उठता रहा. अब राक्षस, दर्जी से बहुत ऊंचा हो गया था. फिर, राक्षस ने पुकारा, "क्या तुम मेरी इस चौड़ी छाती को देख रहे हो?"

दर्जी के घुटने आपस में एक-दूसरे से टकराने लगे. "मैंने आपकी छाती देखी है, पर मुझे इस अर्जेंट काम को पूरा करना ही है," उसने जवाब दिया. और दर्ज़ी फिर से पतलून सिलने में लग गया.

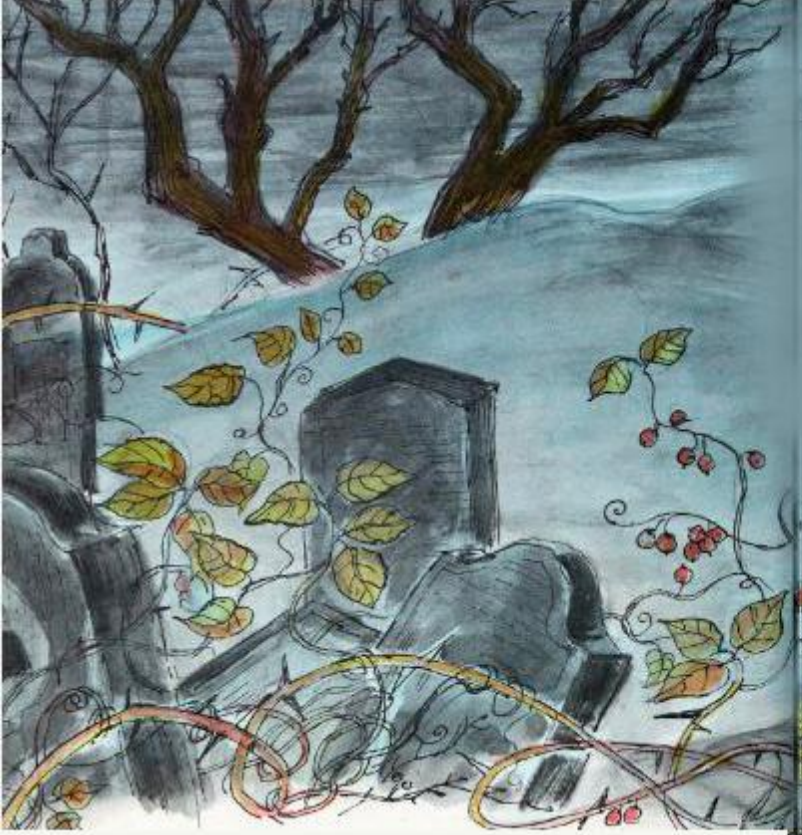

अब राक्षस ऊपर और ऊपर उठा और उसने दर्जी के सामने अपने दोनों विशाल हाथ हिलाए.
"क्या तुम मेरी इन ताकतवर लंबी भुजाओं को देख रहे हो?“
दर्जी के हाथ पसीने से तर-बतर और ठंडे पड़ गए.

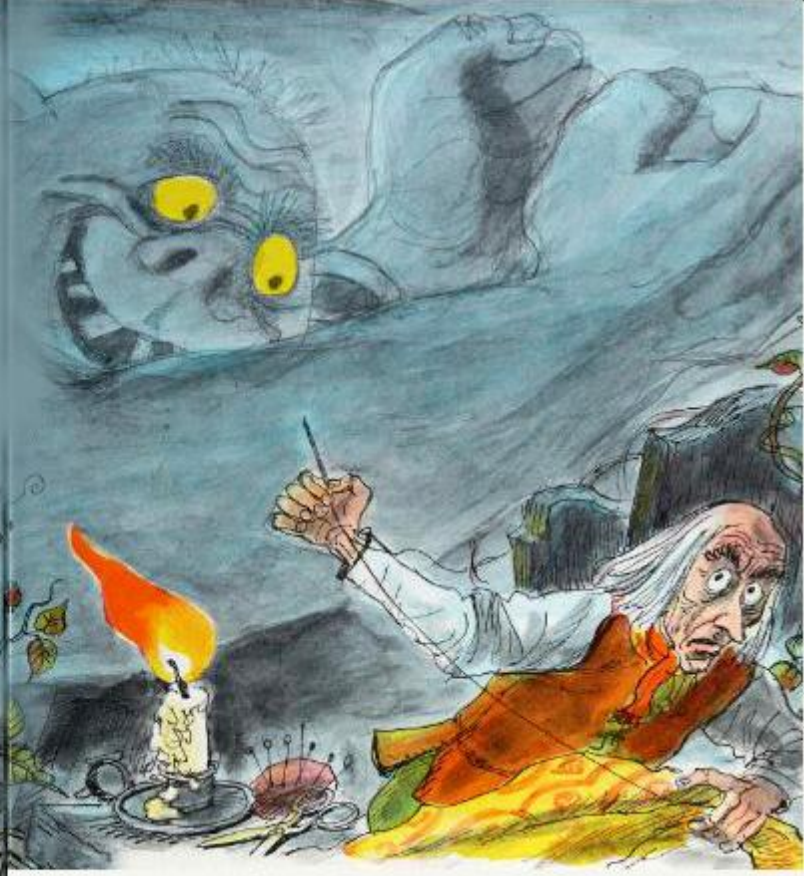

"हाँ, मुझे वो दिख रहे हैं, लेकिन मुझे इस पतलून को ख़त्म करना ज़रूरी है," उसने जवाब दिया. और फिर दर्ज़ी बिजली की तेज़ी से टांके लगाने लगा क्योंकि वो जानता था कि अब उसके पास खोने को एक पल भी नहीं था.

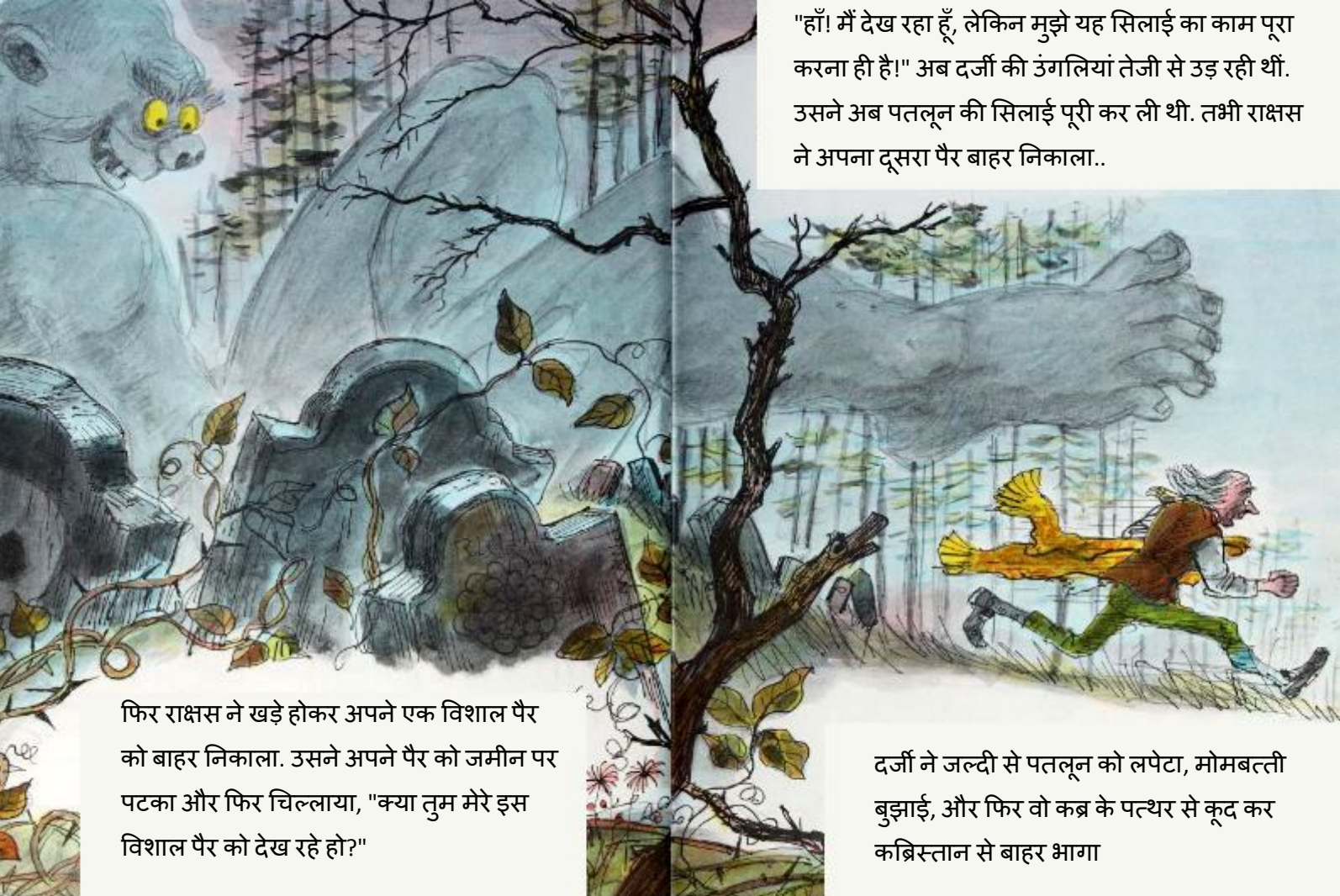

"हाँ! मैं देख रहा हूँ, लेकिन मुझे यह सिलाई का काम पूरा करना ही है!" अब दर्जी की उंगलियां तेजी से उड़ रही थीं. उसने अब पतलून की सिलाई पूरी कर ली थी. तभी राक्षस ने अपना दूसरा पैर बाहर निकाला..

फिर राक्षस ने खड़े होकर अपने एक विशाल पैर को बाहर निकाला. उसने अपने पैर को जमीन पर पटका और फिर चिल्लाया, "क्या तुम मेरे इस विशाल पैर को देख रहे हो?"

दर्जी ने जल्दी से पतलून को लपेटा, मोमबत्ती बुझाई, और फिर वो कब्र के पत्थर से कूद कर कब्रिस्तान से बाहर भागा

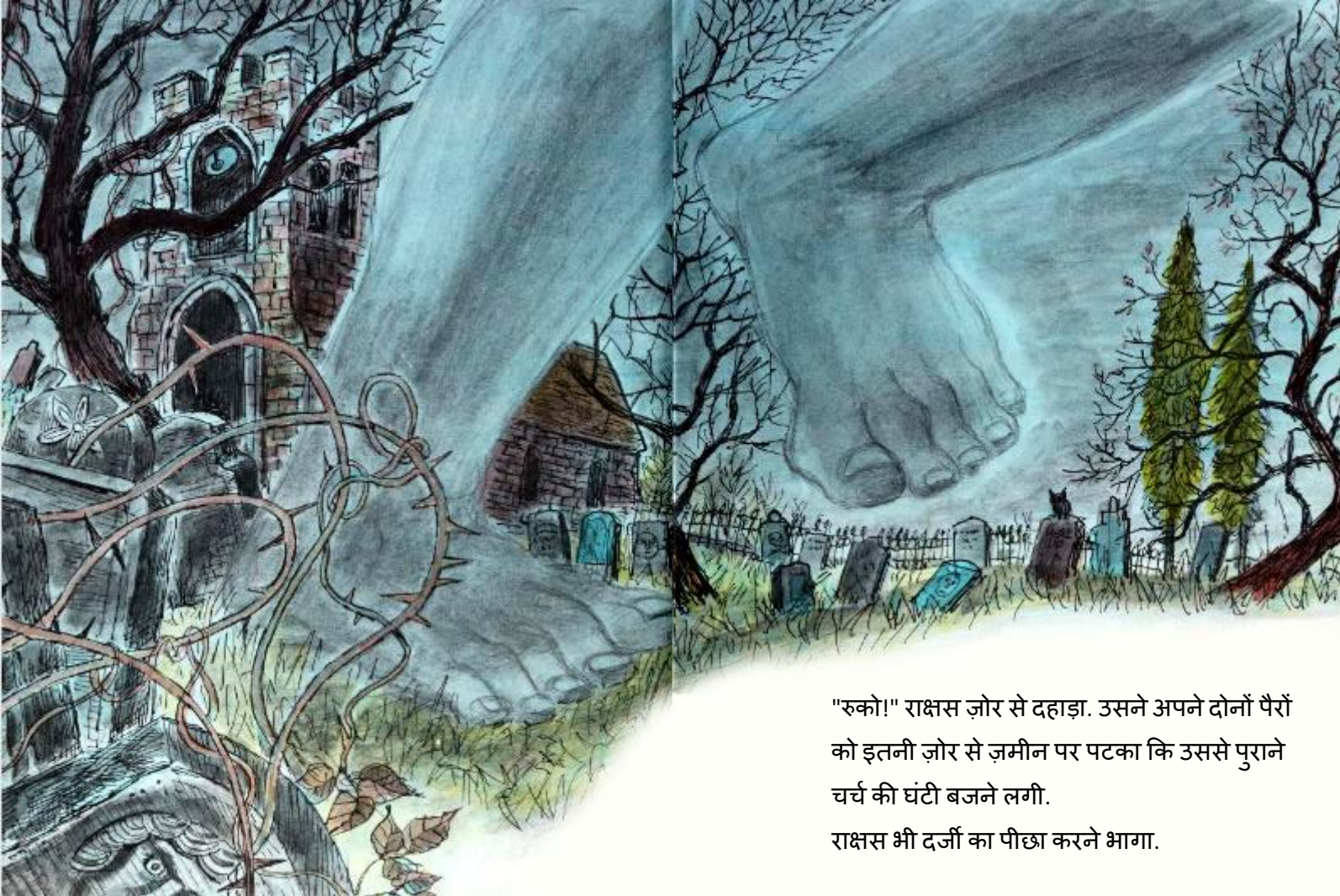

"रुको!" राक्षस ज़ोर से दहाड़ा. उसने अपने दोनों पैरों को इतनी ज़ोर से ज़मीन पर पटका कि उससे पुराने चर्च की घंटी बजने लगी.

राक्षस भी दर्जी का पीछा करने भागा.

नीचे घाटी में दर्जी भागा. उसके पीछे-पीछे राक्षस लंबे डग भरता हुआ दौड़ा और जल्द ही वो दर्ज़ी के बहुत करीब आ पहुंचा.
"कोई भी मुझसे बहुत दूर नहीं जा सकता है," राक्षस चिल्लाया.
"तुम तुरंत रुको!"

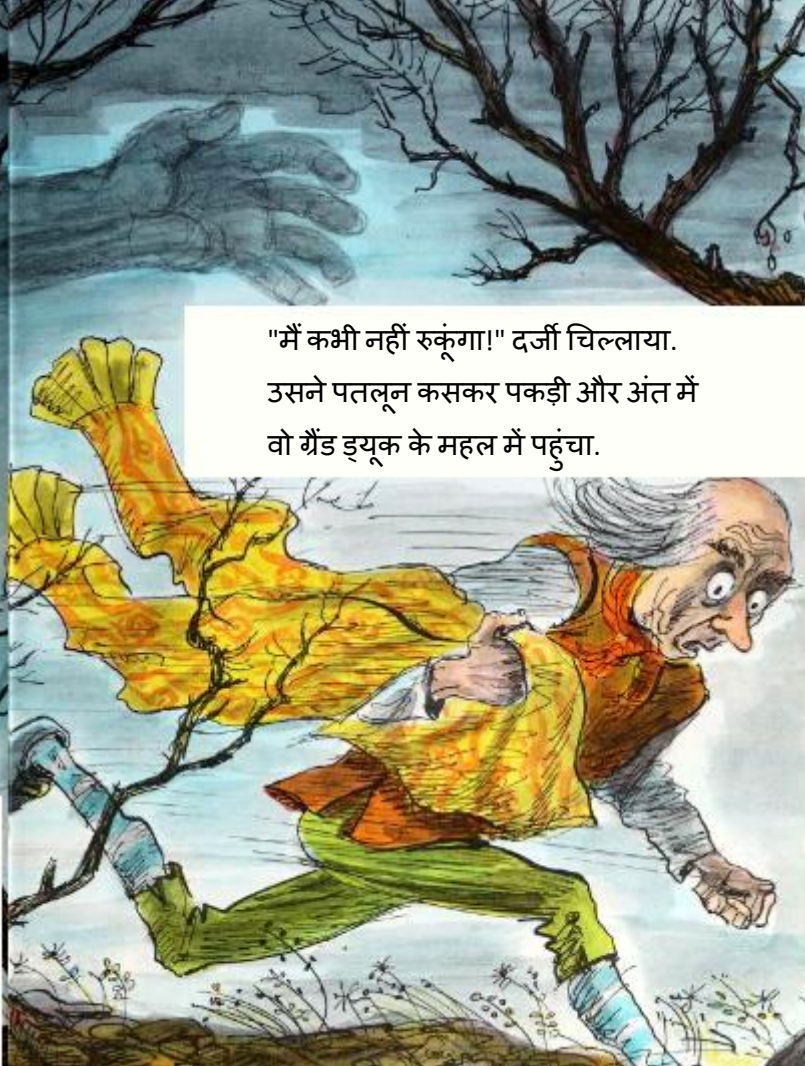

"मैं कभी नहीं रुकूंगा!" दर्जी चिल्लाया.
उसने पतलून कसकर पकड़ी और अंत में
वो ग्रैंड ड्यूक के महल में पहुंचा.

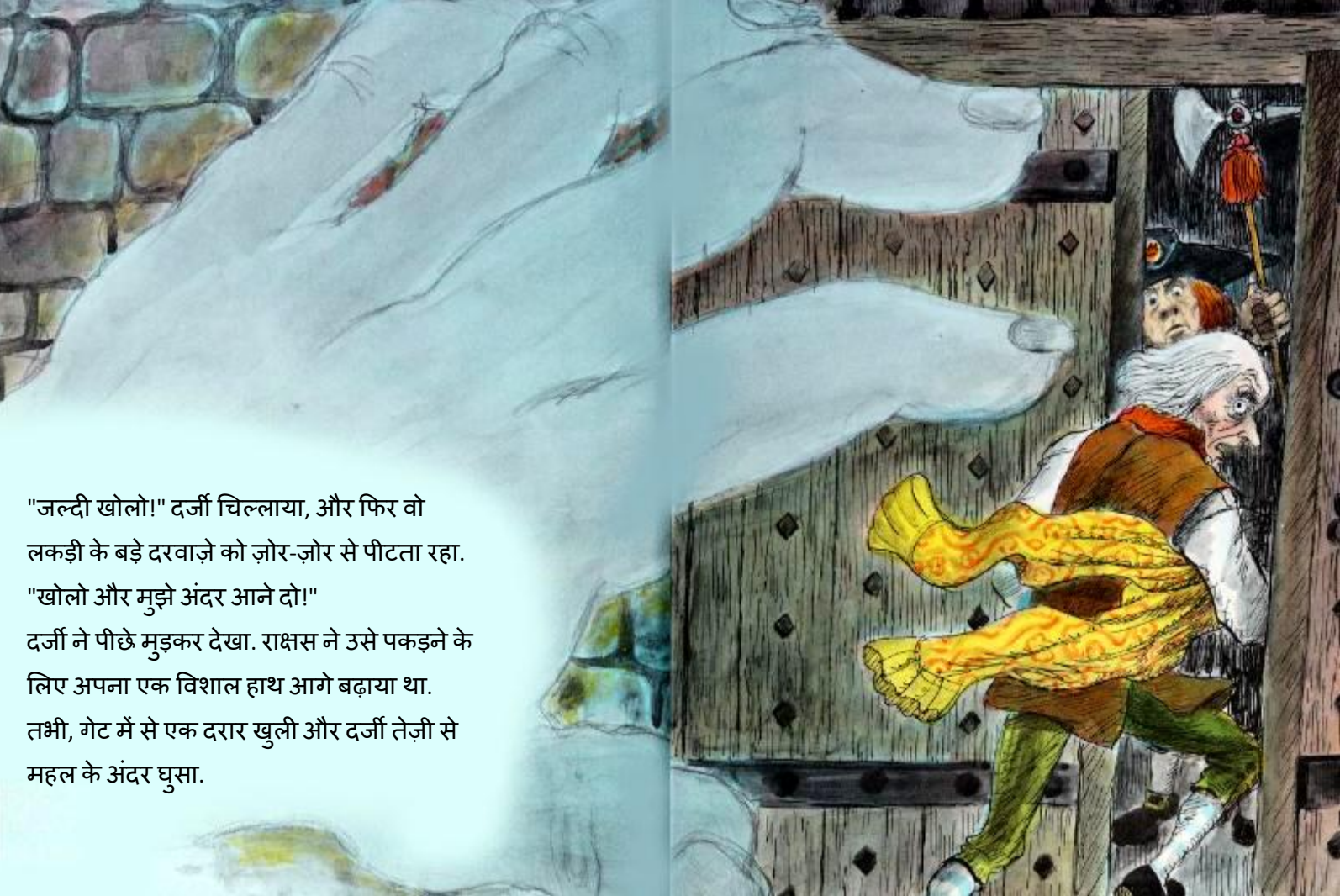

"जल्दी खोलो!" दर्जी चिल्लाया, और फिर वो लकड़ी के बड़े दरवाज़े को ज़ोर-ज़ोर से पीटता रहा. "खोलो और मुझे अंदर आने दो!"

दर्जी ने पीछे मुड़कर देखा. राक्षस ने उसे पकड़ने के लिए अपना एक विशाल हाथ आगे बढ़ाया था.

तभी, गेट में से एक दरार खुली और दर्जी तेज़ी से महल के अंदर घुसा.

और इस तरह ग्रैंड ड्यूक को अपनी भाग्यशाली नई पतलून मिली.

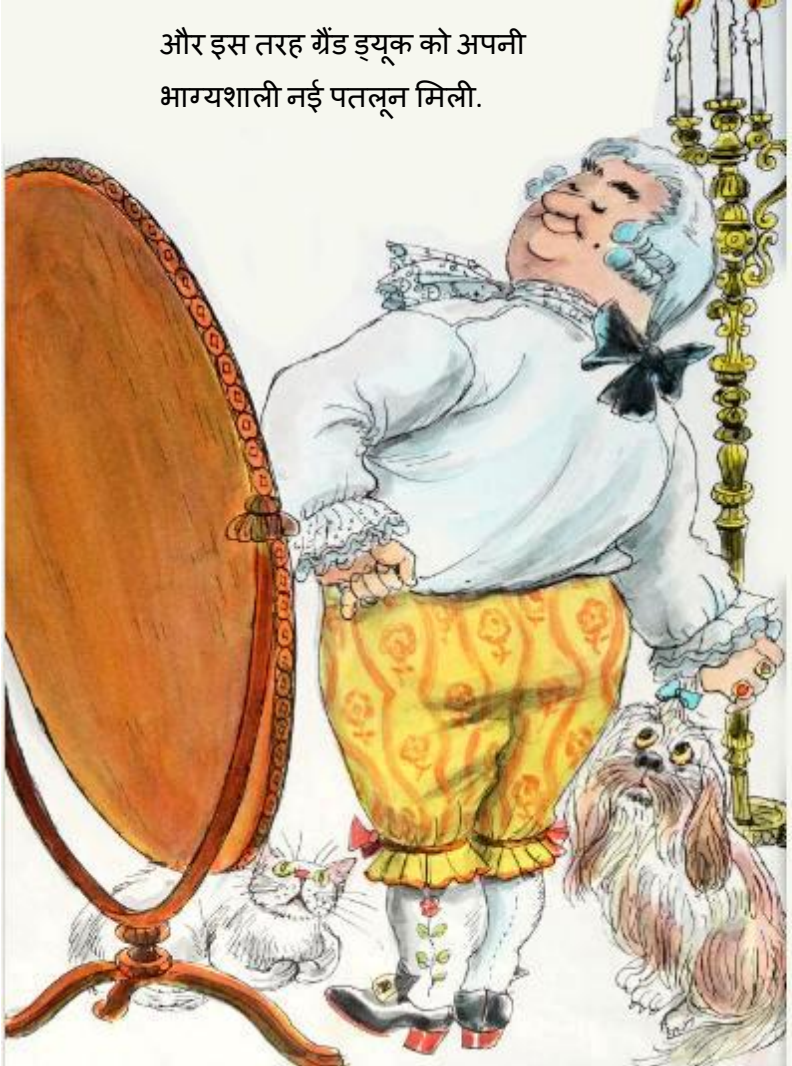

और गरीब दर्जी को, सोने से भरा एक पर्स भी मिला.

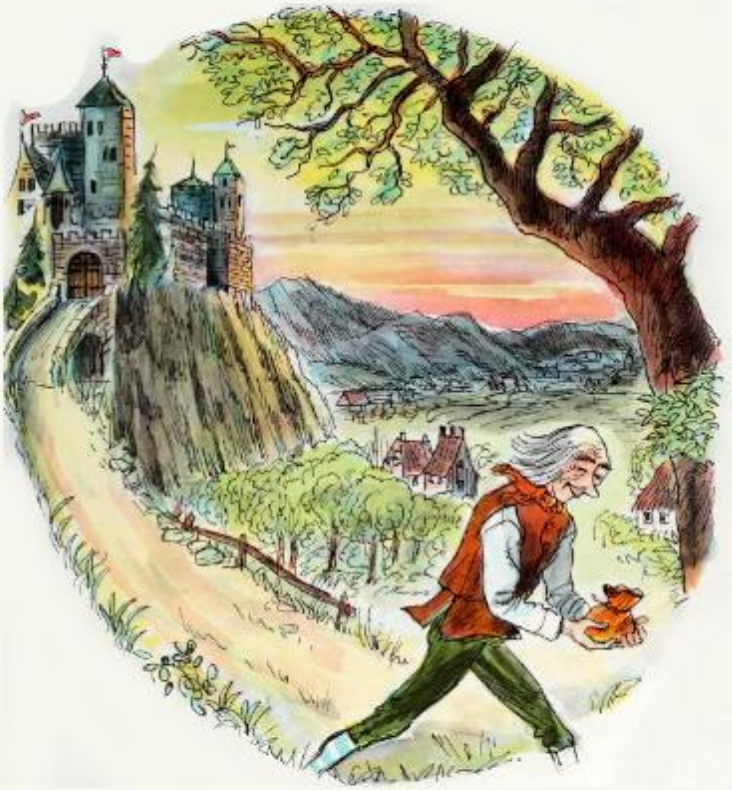

जहाँ तक राक्षस की बात है... .

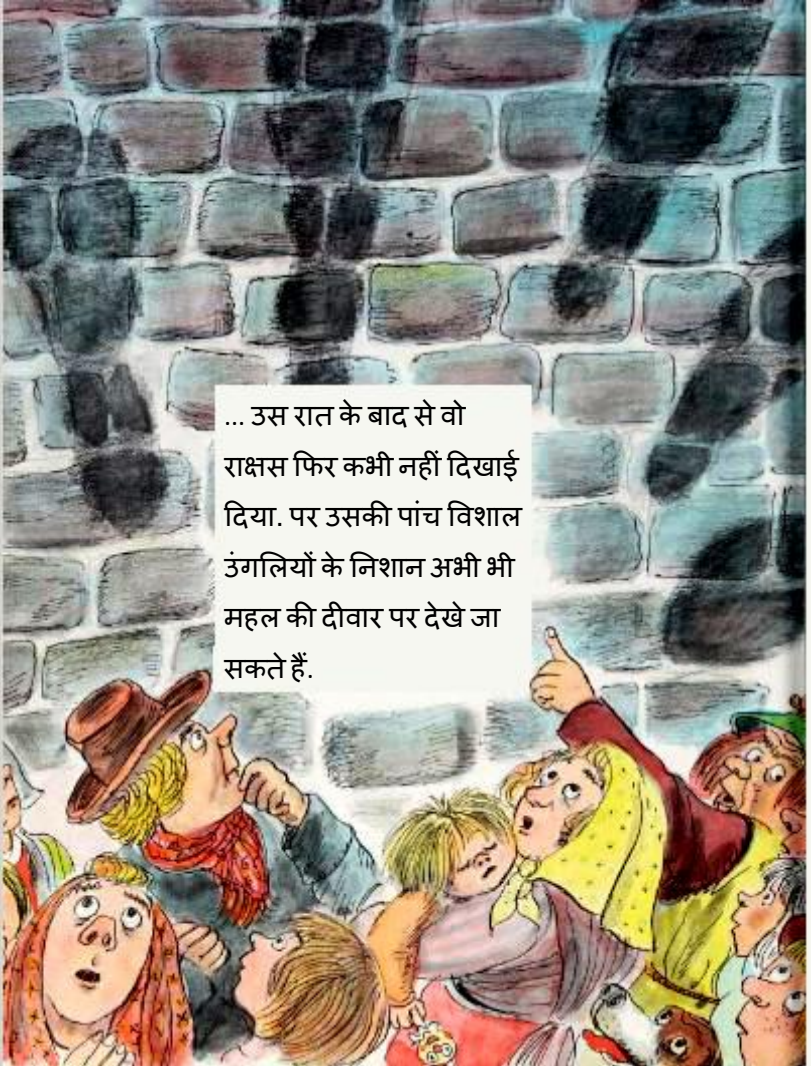
... उस रात के बाद से वो राक्षस फिर कभी नहीं दिखाई दिया. पर उसकी पांच विशाल उंगलियों के निशान अभी भी महल की दीवार पर देखे जा सकते हैं.

अंत